European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 01
January 2019

संत दादू दयाल की सृजनशीलता

प्रवक्ता – डॉ. रवि दहिया
हिन्दू कॉलेज सोनीपत। हिन्दी विभाग

संत दादू का समाज प्रमुखतः साधारण, अनपढ़, अज्ञानी, पीडित लोगों का समाज था, जिसमें गावों के साधारण किसान, गृहस्थ, मजदूर और कारीगर आदि सम्मिलत थे। उनकी वाणी का परिवेश गांवों के लोगों के दौनंदिन वातावरण का है। दादू लोक रंग में रगे हुए थे इसका अनुमान करना भी कठिन है। ग्रामीण लोगों का जो मानसिक धरातल है, उनकी ज्ञान की सीमा है, उनके ज्ञान की जो उपकरण सामग्री है उसके परिचय और समझ को जो क्षितिज है उसी की सीमा के भीतर उन्हीं की बोलचाल की भाषा शैली में दादू ने अपनी वाणी को मुखरित किया है।

मुख्य शब्द - संत, भक्तिकाल, सामाजिक समस्या।

संत दादू दयाल भक्तिकाल के प्रमुख संत भक्त थे। उनका जन्म 1544 ई. में अहमदाबाद के एक ब्राहमण परिवार में हुआ था व उनकी मृत्यु 1603 ई में हुई।

संत दादू वाणी में उनके स्वंय का मौलिकता एवं स्वतंत्र अनुभूतियॉ मिलती है जो उन्हें कबीर की परम्परा में ठहराते हुए भी कबीर से भिन्न प्रदर्षित करती है।

संत दादू का समाज प्रमुखतः साधारण, अनपढ़, अज्ञानी, पीड़ित लोगों का समाज था, जिसमें गांवों के साधारण किसान, गृहस्थ, मजदूर और कारीगर आदि सम्मिलित थे। उनकी वाणी का परिवेष गांवों के लोगों के दौनंदिन वातावरण का है। दादू लोक रंग में रगे हुए थे इसका अनुमान करना भी कठिन है। ग्रामीण लोगों का जो मानसिक धरातल है, उनकी ज्ञान की सीमा है, उनके ज्ञान की जो उपकरण सामग्री है उसके परिचय और समझ को जो षितिज्ञ है उसी की सीमा के भीतर उन्हीं की बोलचाल की भाषा शैली में दादू ने अपनी वाणी को मुखरित किया है।

संत दादू की सृजनशीलता के संदर्भ में आचार्य हजारी प्रसाद कहते हैं – ''कबीर और दादूदयाल की वाणियों में समता अनेक है पर दोनों का व्यक्तित्व भिन्न हैं। दादू ने भी बाह्याचार का खंडन किया है और कबीर ने भी। पर दादू में वह उग्रता और तीव्रता नहीं है जो कबीर के पदों में है। दादू स्वभाव से विनयमधुर है और यह माधुर्य ही उनकी वाणियों की शोभा है जबकि कबीर की वाणियों की जान उनकी

European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 01
January 2019

फक्कड़ मस्ती है। दादू अपनी बात कहते समय प्रीत और नम्र दिखाई देते हैं।'' वे उस व्यक्ति को ही सच्चा साधु मानते हैं जो उग्र को शांत बना सके, रुद्र को प्रसन्न कर सके। साधु वह है जो वि"ा को अमृत कर सके, आग को पानी बना सके, बांके को सूधा कर सके, जो ऊन को पूर्ण कर सके, खारे को मीठा कर सके, फूटे को सारा कर सके, जो बुद्ध को मुक्त कर सके, उलझे को सुलझा सके, वैरी को मित्र बना सके, जो झूठे को सच्चा कर सके, कॉच को कंचन बना सके, मैले को निर्मल कर सके।

झूठा साचा कर लिया, कांचा कंचन सार।

मैला निर्मल कर लिया दादू ज्ञान विचार।

दादू का यह अपना वैषि"ट्य है। दादू कहते है, ऐसी अनुभूति किस काम की जिससे हर एक को क्लेश और कष्ट होता है। इससे जो अच्छा यही है कि साधु– पुरुषों की साखियों को सुनकर उसे समझा जाए।

दादू द्वै–द्वै पद किए, साखी भी द्वैचार।

हमको अनभै ऊपजी, हम ज्ञानी संसार।

दादू के मातनुसार पदों या साखियों के जोड़ने मात्र से जीवात्मा को परमतत्व का ज्ञान कैसे हो सकता है। दादू के समय में इनेक धर्म सप्रंदाय प्रचलित थे। दादू ने सभी की चर्चा अपनी वाणी में की है और उनसे अपनी असहमति व्यक्त की है। दादू ने विरोध भी किया है तो सहज रुप में कबीर की भांति उनको ध्वस्त नही किया है। विरोध की भावना उनकी वाणी में बहुत कम मिलती है, क्योंकि दादू का व्यक्तित्व और स्वभाव 'ांतिप्रिय था और वे किसी बहस में उलझना पसंद नहीं करते थे। उन्होंने एक पद में अनावश्यक बहस करने वालों की आलोचना की है –

वाद–विवाद न कीजै कोइ, वाद–विवाद न हरि रस होइ''

संत दादू ने कबीर की भांति बाह्यांडबरों तथा पाखंडियों का मखौल नहीं उडाया है दादू अपनी वाणी में न तो किसी की निंदा करते, किसी को अज्ञानी या मूर्ख कहते हैं। दादू वाणी में पंडित, मौलवी अवधूत को संबोधित बहुत कम किया है ने उसमें हास्य व्यंग्य की प्रवृति है। विरोधियों को पछाडने, उन्हें फटकार देने का भाव बहुत कम है। वे अपने पद अनुयायियों को संबोधित करते हैं जैसे एक पद में दादू ने अपने शिष्यों को निंदा नहीं करने का उपदेष देते हैं।

न्यंदा स्तुति एक करि तौले, तासौं कहै अपवाद हिं बोलें।

European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 01
January 2019

दादू निंदा ताकौ भावै, जाकै हिरदे राम न आवै।

संत दादू जब मूर्ख व्यक्तियों पर क्रोध एक सीमा तक बढता है। क्रोध में भी तटस्थता बनाए रखते हैं। वह उसमें झीकतें नहीं बल्कि व्यक्ति को समझाने का प्रयास करते हैं ताकि वह अब भी सचेत होकर पापा से बच जाए। वे भगवान के सामने कभी गिड–गिडाते नहीं, अपने कष्टों का बखन करके भगवान का आह्वान करके चुप हो जाते हैं। आगे कार्य ईष्वरीय शक्ति पर निर्भर करता है तथा ईष्वर पर पूर्ण विश्वास करके प्राणी मात्र से प्रेम करने की प्रेरणा देते हैं तथा तन–मन से अवगुणों को, त्यागने तथा प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने की प्रेरणा भी अपनी वाणी से देते हैं जैसे –

आपा मेटे हरि भजे तनम न तजे विकार

निवैरी सब जीव सूं दादू यहु मतसार।''

संत दादू ने मानव जीवन को मंगलमय बनाने, मानवता के उक्त सार्थक मूल्यों का पालन करने से ही मानव, समाज न राष्ट उन्नति की ओर बढ़ेगा।

संत दादू ने अपनी वाणी में स्वार्थी लोगों द्वारा मानव समाज को जाति–धर्म, भगवान के नामों पर बांटकर एक दूसरे के प्रति घृणा एवं बैर पैदा करने वालों से सावधान रहने के लिए प्रत्यक्ष अनुभव ज्ञान दिया है मानव समाज के अमूल्य 'ारीर, 'ाक्ति और अमूल्य समय को दूसरों को कष्ट देने में नष्ट करने से मना किया है, क्योंकि यह शरीर और प्राप्त समय पुनः कभी भी प्राप्त नहीं होगें।

बार–बार यहु तन नहीं नर नारायण देह

दादू बहुरि न पाइए, जनम अनमोल नेक।

स्वार्थी लोग कभी जाति के नाम पर, कभी धर्म के नाम पर तो कभी भगवान के नाम पर ही समाज को बांटकर आपस में लड़ा देते हैं। इस संबंध में दादू ने ज्ञानों पदेष अपनी वाणी में दिया है।

दादू सिरजन हार के, केते नाम अनंत

चित आवे सो लीजिए यो साधु सुमिरे संत।

European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 01
January 2019

संत दादू के क्रांतिकारी विचार विभिन्न रुप में प्रदर्षित हुए है। जगत में चेतना लाने के विषे"ा आग्रह के कारण ही उन्होंने मन के अंग में चिंत की पांचों दषाओं की ओर संकेत किया हैं मन की दृढ़ इच्छा की ओर संकेत करते हुए वे मनुष्य को सावधान करते हुए कहते हैं।

दादू जिनि वि"ा पीवै बावरे दिन–दिन बाठ रोग

दे"ाते ही मरि जाएगा, तजि वि"ा या रस भोग।

निस्संदेह सांसरिक मनुष्य चित की क्षिप्त दिषा में भ्रमता रहा है। मन की इस चंचल क्षिप्त अवस्था में मनुष्य अनेक सांसारिक भोगों में लिप्त रहता है। अनुचित उचित का भेद जानकर मनुष्य अपने मन को स्थिर करने का प्रयत्न, संतों की संगति में रहकर हरि भजन करते हुए कर सकता है –

चंचल चपल चहूं दिसि भरमें, कहा कर जन कोई रे।

सदा–सोच रहत घट भीतरी मन स्थिर कैसे कीजै।

सहजै सहज साध की संगति, दादू हरि भजित लीजै रे।

संत दादू दयाल का समाजिक परिवेष हिंदू–मुस्लिम वैमनस्य का था। मुसलमानों की हिंसावादी वृति से संत चिंतित थे। दादू कबीर आदि संतों ने हिन्दू व मुस्लिम दोनों समाजों में जो भी विकृतियॉ देखी, उन्हों पर कठोर प्रकार किया। उदाहरणः–

दादू गल काटै कलमा भरैं आया विचारा दीन

पांचों बख्त निमाज गुजारे स्यावति नहीं अकीन।

प्रत्येक काल में ढोंगी व्यक्तियों के प्रपंच का बोलबाला रहा है। मात्र दिखावे के साधु संतों का वेष धारण करने वालों जीवन की विडम्बना ध्यातत्य है –

जोगी जंगम सेवड़े बोध सन्यासी सेष

पर दर्षन दादू राम बिन सनै कपट के भेषा।

दादू ने मनुष्य को बदलने वाली आदर्षवादी सांस्कृति योजना अपनी कविता में प्रस्तुत की है। परन्तु यह योजना व्यावहारिक नहीं थी तेा भी उनकी रचना – प्रक्रिया का आरंभिक बिन्दु केवल मानवीय चिंता ही

ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 01
January 2019

दृष्टि गोचर होती है। व्यक्ति और समाज दोनों के हित की बात कही है तथा परोपकारी व्यक्ति को उत्तम माना है।

परमारथ को सब किया, आप सवारथ नांहि।

परमेसर परमारथी, कै साधू कलियां हि।

पर उपगारी संत सब, आपे इहि कलि मांहि।

पिवै पिलावै राम रस, आप सवारथ नांहि।

पर उपगारी संत जन, साहिब तेरे।

जाती देखी आत्मा राह कही टेरे।

संसार में सभी वृतियों के मनुष्य विद्यमान है। मानवीय जीवन, जीवन का महत्वपूर्ण दर्शन है सार तत्व का ग्रहण करना और निस्सार का त्याग करना। अनित्य लोगों के द्वारा नित्य तत्व की प्राप्ति नहीं हो सकती। इस प्रकार का भाव दादू की वाणी में दिखाई देता है –

दादू हंस माती चुगै, मान सरोवर जाई

बगुला छोलरि बापुडा चुणि–चुणि मछली खाई।

दादू वाणी की सृजनशीलता है कि वे जन केवल अध्यात्मिक वि"ायों को अपनी वाणी में स्थान देते है बल्कि प्रकृति से हस्तक्षेप करने पर संतुलन बिगडने से रोकने का ज्ञानोपदेश भी देते हैं मानव समाज एवं भगवान इंद्र से भी सहयोग की प्रार्थना करते हैं। हरे पेडों की कटाई से वर्षा का अभाव हो जाता है और अकाल पडता है। ऐसे समय में दादू ने मानव – मात्र को ज्ञान कराया कि हरे पेडों में जीव है, भगवान उनमें विद्यमान है। इसलिए सूखे पेडों को तो काम में ले लेना चाहिए। परन्तु हरा पेड नहीं काटना चाहिए।

दादू सूखा सहजे कीजिए नीला माने नांहि।

काहे को दुःख दीजिए, साहिब है सब मांहि।।

वर्षा होने से पृथ्वी हरी–भरी हो जाएगी, सब प्राणी आनंदमय हो जायेंगे। संत दादू इन्द्र भगवान से वर्षा का आग्रह करते हैं –

European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 01
January 2019

काला मुंहकर काल का, सांइ सदा सुकाल।

मेघ तुम्हारे घर घणां, बर सहु दीन दयाल।

व सुधा सब फूले फले, पृथ्वी अनंत अपार

गगन गर्ज जल थल भरे, दादू जै जै कार।

दादू अपनी वाणी में सत्य के तय का ज्ञानोप्रदेश देते है। कर्मो का फल निश्चित है उसको कोई नहीं टाल सकता है। जिस कर्म को स्वाभवष किया जाता है, उसका फल उसके अनुसार भगवान देते हैं। इस तत्य का ज्ञान दादू ने कराया है –

घट–घट दादू कह समझाये जैसा करे सौ वैसा पावे

को काहू का सीरो नाही, साहिब देखें सब घट मांहि।

इस प्रकार संत दादू वाणी की सृजनशीलता में इस धरती के प्राणिमात्र के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त है। इस संदर्भ में बलदेव वंषी का कहना है मनुष्य को उतम प्राणी होने के नाते वन्य प्राणियों के प्रति स्नेह, दया, त्याग के व्यवहार से आटिमक श्रेष्ठता सिद्ध करनी चाहिए। दादू जी की वाणी में हिन्दू – मुसलमान का भेद भी नहीं स्वीकार किया गया। सभी प्राणी समान है जैसे जल, धरती, आकाष समान है। मौलवियों और पंडितों की इस भूमि पर दादू जी ने आलोचना की है। वैदिक काल के मानवीय समानता एवं सामूहिक आटिमक उत्थान के विचारों को दादू जी भी प्रचारित करते हैं। जहां मात्र धार्मिक रहस्यात्मक कुहासा नहीं, शुद्ध जीवन–प्रकाश है। अध्यात्मक का उजाला है। प्रत्येक व्यक्ति अपने श्रेष्ठ मानवीय कर्मो से, आत्मिक उन्नति करते हुए मुक्ति पा सकता है।''

संक्षेप में दादू वाणी की सृजनषीलता में मौलिकता, स्नानुभूति, सहजता और प्रेमभाव की अभिव्यक्ति हुई है, वह शताब्दियों तक हमारे समाज और राष्ट्र को नई गति प्रदान करेगी। उनकी वाणी हमारे देश के पद दलित, अनपढ़ और उत्पीडित लोगों को नई राह देगी तथा संतो को सांस्कृतिक नेतृत्व प्रदान करेगी।

ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 01
January 2019

संदर्भ –

1. संत कवि दादू, सं. बलदेव वंषी, पृ.41
2. दादू वाणी, सं. परषुराम चतुर्वेदी, पृ.329
3. उपरिवत् पृ. 330
4. उपरिवत् पृ. 429
5. उपरिवत् पृ. 477
6. उपरिवत् पृ. 171
7. उपरिवत् पृ. 109
8. उपरिवत् पृ. 17
9. उपरिवत् पृ. 181
10. उपरिवत् पृ. 112
11. उपरिवत् पृ. 140
12. उपरिवत् पृ. 131
13. उपरिवत् पृ. 181
14. उपरिवत् पृ. 235
15. उपरिवत् पृ. 42
16. उपरिवत् पृ. 169
17. संत कवि दादू, सं. बलदेव वंषी, पृ. 15

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. स0 रवीन्द्र कालिया, नया ज्ञानोदय (मासिक) पृ0–65
2. डॉ0 धर्मेन्द्र गुप्त लघु पत्रिकाएं और साहित्यिक पत्रकारिता, पृ0–93
3. ज्योति जोषी, साहित्यक पत्रकारिता पृ0–26
4. स0 प्रताप सिंह बि”ट आजकल फरवरी 1952 पृ0 59